Impact Factor 2.147

ISSN 2349-638x

Refereed And Indexed Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-III ISSUE-IX Sept. 2016

Address
•Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
•Tq. Latur, Dis. Latur 413512
•(+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
•aiirjpramod@gmail.com

Website
•www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

अनुवाद और वैश्वीकरण

प्रा. डॉ. मा. ना. गायकवाड
कै. व्यंकटराव देशमुख महाविद्यालय,
बाभळगाव
drmana358@gmail.com

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जिस अनुवादित साहित्य की अनुभूति हमें प्रखरता से हो रही है, वह अनुवाद साहित्य आधुनिक काल की फलश्रुति नहीं, बल्कि प्राचीन काल से देखी जाती है। अनुवाद प्रायः उतना ही प्राचीन है जितना मूल लेखन और उसका इतिहास भी उतना ही भव्य और जटिल है जितना साहित्य की किसी दूसरी शाखा का। अनुवाद 'वाद' शब्द संस्कृत के 'वद' धातु से निष्पक्ष है और इसी वाद में विभिन्न उपसर्गों को जोड़कर विवाद, संवाद, प्रवाद, अपवाद, प्रतिवाद और अनुवाद शब्द बनें हैं। भाषाओं की संख्या इतनी अधिक हैं संसार में किन्तु सभी का साहित्यिक महत्व नहीं है। अनुवाद प्राचीन भारतीय समाज की विशिष्ट विधा है। यह प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों से तथा साहित्यलोचन से प्रमाणित होता है।

'अनुवाद को बीसवीं सदी का वैचारिक हत्यार माना जाता है। बीसवीं से यह अत्यन्त अनिवार्य हो गया है। अगल-अगल भाषा के क्षेत्र में सम्पर्क और विचारों के आदान-प्रदान का एक मात्र माध्यम है अनुवाद! विश्व के अधिकांश देश बहुभाषिक है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न राष्ट्र के बीच राजनीतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक तथा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक स्तर पर बढ़ते हुए आपसी सहयोग के कारण अनुवाद कार्य की अनिवार्यता और महत्ता की नई चेतना विकसित हुई। अतः अनुवाद एक सीमा तक अनिवार्यता और तर्क संग स्थिति है।'

आज का युग 'वैश्वीकरण' का युग है। इस 'वैश्वीकरण' के युग में सम्पूर्ण विश्व एक परिवार की तरह आपस में जुड़ा हुआ है। परिवार के सदस्यों में जैसे आत्मीयता के भाव होते हैं ठीक वैसे ही विश्व के सम्पूर्ण देशों में आत्मीय-भाव उत्पन्न करना भाषा का कार्य होता है। अनुवाद एक भाषा की पाठ्य-सामग्री को दूसरी भाषा की पाठ्य-सामग्री में अन्तरित करना है। अनुवाद के द्वारा मूल पाठ के भावों को अक्षुण्ण बनाए रखकर, पाठ्य-सामग्री का लक्ष्य भाषा में अन्तरण करना अनिवार्य होना चाहिए, तभी वह सटीक या मूल के करीब अनुवाद बन जाता है। अनुवाद करते समय अनुवादक भी मूल पाठ के समग्र भावों का यथातथ्य अंकन नहीं कर पाता। कुछ तो छूट ही जाता है और कुछ वह स्वतः ही अपनी ओर से जोड़ भी देता है। अतः उसे सावधानी बरतनी चाहिए कि अनुवाद में इस प्रकार जोडा या घटाया न जाए। मूल भावों को वह अक्षुण्ण बनाये रखे और उनकी ही अभिव्यक्ति करे। परिणामतः शत प्रतिशत अनुवाद सम्भव ही नहीं है। ऐसा विद्वानों का मानना है। तात्पर्य यह है कि, अनुवाद कार्य अति सावधानी व परिश्रम का कार्य है, जिसे अभ्यास से ही सहज़ बनाया जा सकता है। वह अत्यन्त कष्ट साध्य होता है।

जीवन का कोई भी क्षेत्र आपाधापी से अछुता नहीं बच पाया है। इसी परिप्रेक्ष्य में मानव-जीवन का ज्ञान क्षेत्र भी कैसे बच सकता है। ज्ञान को विषयवार इकाइयों में अपने अध्ययन के सुविधा हेतु विभाजित किया गया है। ज्ञान तो शाश्वत है, सार्वभौम है, सर्वकालिक है। अनुवाद ज्ञान की विश्व-जननीता तथा शाश्वत गुणों को परिपुष्ट करनेवाली विधा है। अनुवाद के माध्यम से एक देश, संस्कृति व काल विषय विशेष के विषय ज्ञान को अन्य देश संस्कृति व काल के लिए अनूदित कर, प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रकार ज्ञान की सीमाओं का निरन्तर विकास जो होता उसमें अनुवाद का विशेष महत्व है। इलेक्ट्रानिक संचार माध्यमों के उपयोग से सूचनाओं का आदान-प्रदान तेज़ी से होने लगा है। सम्पूर्ण विश्व में छोटी-सी छोटी होनेवाले घटनाक्रम से परिचित हो जाते हैं, यह सब सम्भव हो रहा है भाषा के माध्यम से ही। अनुवाद इन विविध भाषाओं में पाठ्य-सामग्री का आदान-प्रदान या विनिमय करता है। अनुवाद के द्वारा ही सब सूचनाओं के सम्प्रेषण का कार्य सम्भव हो सका है। विश्व को एक ग्राम अथवा परिवार के रूप में संगठित करने का सामाजिक कार्य अनुवाद के माध्यम से ही सम्भव हो सका है। अनुवाद ही ऐसी विधा है जिसके माध्यम से विजातीय भाषाओं में भी सामग्री का अन्तरण किया जाना सम्भव होता है। इलेक्ट्रानिक संचार माध्यमों में हिन्दी का अनुवाद करते समय अनेक शब्दों अलग-अलग ढ़ंगों में प्रस्तुत किए जाते हैं। उसका सही अर्थ पाठकों तथा श्रोताओं तक जाना जरूरी है। किन्तु आम तौर पर भाषा-विशुद्धी और व्याकरण की त्रुटियाँ पायी जाती हैं।

आज सरकारी कार्यालयों में अंग्रेजी व हिन्दी दोनों में कार्य होता है। हिन्दी में अनुवाद की व्यवस्था तथा अनुवादकों के पद निर्मित किए गए हैं। अनुवाद को सहज, स्वाभाविक तथा भाषा की प्रकृतिनुरूप बनाकर हिन्दी को राजभाषा के पद पर आसीन कराने में ही अन्ततोगत्वा मदद मिलती है। अनुवाद जहाँ एक ओर संवाद का सशक्त साधन है तो अनुवाद रोजगारोन्मुखी अवसर भी प्रदान करता है। बहुराष्ट्रीय व्यापारिक कम्पनियों में ग्राहकों की भाषा में में जो आदान-प्रदान करता है उसे अधिक महत्व दिया जाता है। यह कम्पनियाँ अपना वैश्वीकर स्तर कायम रखने के लिए कार्यालयों में अंग्रेजी का प्रयोग करती है, लेकिन ग्राहकों को उनकी भाषा में उतरती है यह सारा का काम अनुवाद के माध्यम से ही होता है।

आज़ादी के बाद इस विविध भाषा-भाषी देश को एकसूत्रता में बाँधने की क्षमता किसी में है तो वह है अनुवाद। अनुवाद की लक्ष्य भाषा तो निश्चित ही हिन्दी है चूँकि वही हमारे राष्ट्र ही अस्मिता की भाषा है। अनुवाद ने लक्ष्य भाषा हिन्दी को समृद्ध कर, राष्ट्रीय एकता को संबल ही प्रदान किया है, अनुवाद भाषा जैसे सांस्कृतिक दृष्टि से वैविध्यतापूर्ण देश में एक सेतु का कार्य करता है।

अनुवाद आज राष्ट्रीय एकता ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय सामंजस्य व विश्व-ग्राम की हमारी भारतीय संस्कृति की रूपायित करने में अहम भूमिका निर्वाहित कर रहा है। प्रो. शिवकुमार का बयान है कि, ''आज जब विश्वग्राम की कल्पना और अवधारणा साकार रूप ग्रहण कर रही है, देशों की दूरियाँ मिट रही है, व्यापार, व्यवसाय, वैज्ञानिक अन्वेषण हमें आदान-प्रदान करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं और यह समय की अनिवार्य माँग होती जा रही हे, तब एक भाषा से दूसरी भाषा में 'अनुवाद' अत्यन्त आवश्यक हो गया है।'' अनुवाद अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को प्रगाढ़ करने तथा सांस्कृतिक समन्वय ही प्रतिस्थापना करने के लिए आवश्यक है। यह सत्य है कि, सम्पूर्ण विश्व मानव को मानव जोड़ने काम कर रहा है। मानवी गुणों का विकास भी साहित्यिक अनुवाद के माध्यम से ही सम्भव हो सका है। डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय जी कहते हैं कि, ''साहित्यिक अनुवाद वास्तव में पुनर्सृजन ही होता है, इससे हमारे रागात्मक प्रवृत्तियों का अवश्य ही विकास होता है और साहित्यिक अनुवाद आस्वादन की प्रस्तुति कर हमारी आनंद मूलग प्रवृत्तियों को सन्तुष्ट कर उन्हें पल्लवित कर समुचित मात्रा में विकसित करता है।''

अनुवाद ही विश्व में मानवतावादी चिन्तन व मूल्यों की प्रतिस्थापना में उल्लेखनीय भूमिका ही रही है। सैंकड़ों विदेशी भाषा के लिखे हुए ग्रंन्थों का अनुवाद विविध भाषाओं में हुआ है, अर्थात् उन विचारों का आदान विविध देशों में पाया जाता है, संगणक की अनिवार्यता को ध्यान में रखते हुए अनेक कम्पनियों ने संगणक के लिए अनुवादक के साफ्टवेयर बनाए है, जो चंद मिनीटों में अनुवाद का काम किया जाता है। साफ्टवेयर से बनाए अनुवाद व्याकरण की दृष्टि से भले ही सही ना हो लेकिन सामान्य लोगों का काम बनाना है, ये भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। भावना, और विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए व्याकरण की आवश्यकता नहीं होती।

अत: मानवी जीवन का विकास का पैय्या वैश्वीकरण है। वैश्वीकरण के इस युग में अनुवाद अपनी अहम् भूमिका निभा रहा है। ये कहना वाज़िब नहीं होगा कि, वैश्वीकरण का एक खम्बा अनुवाद है। अनुवाद के बिना वैश्वीकरण की कल्पना व्यर्थ है। वैश्वीकरण में बाज़ारवाद जिस तेज़ी में आया है उसका मूल कारण व्यापार है। व्यापारिकरण का मुख्य स्रोत अनुवाद ही है। व्यवसाय की सफलता-असफलता भाषा पर निर्भर होती है। भाषा का सम्बन्ध ग्राहकों से हैं। ग्राहकों का सम्बन्ध अनुवाद से है।इसीलिए वैश्वीकरण में अनुवाद का अनन्य साधारण महत्व है।

सन्दर्भ संकेत:

१. अनुवाद, वर्णव्यवस्था आणि मी- डॉ. सूर्यनारायण रणसूभे
२. अनुवाद का सामाजिक परिप्रेक्ष्य- व्यावसायिक जगत् और अनुवाद- गोपाल शर्मा
३. आज का हिन्दी अनुवाद- राष्ट्रीय संगोष्ठी- पत्रिका
४. हिंदी भाषा और उसके रूप- डॉ. हिरालाल शर्मा
५. मशीनी अनुवाद- डॉ. हिरालाल शर्मा
६. बाज़ारवाद में हिन्दी- प्रभाकर श्रोत्रिय